Dr M. Kotha
Dept of Sociology
V.S.J college, Srinagar

B.A part-I
paper-II
Social Thinker

Question- मॉर्गन द्वारा प्रस्तुत परिवार के उद्विकास (Evolution of Family) सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।

Answer- लेविस हेनरी मॉर्गन (Lewis Henry Morgan) समाजशास्त्र एवं मानवशास्त्र में एक उद्विकासवादी विचारक हैं जिनका जन्म 1818 में न्यूयार्क में हुआ था। मॉर्गन आदिम समाजों की संस्कृति का गहन अध्ययन किए हैं मॉर्गन संस्कृति का संघटन के आधार पर परिवार, नातेदारी और आदिम अर्थव्यवस्था आदि की विवेचना की है।

मॉर्गन के अनुसार परिवार समाज की केन्द्रीय इकाई है। मानव समाज का इतिहास परिवार पर आधारित है। मानव जीवन का प्रारम्भ परिवार के साथ हुआ है जो किसी न किसी रूप में सांस्कृतिक विकास के सभी स्तरों पर पाया गया है। चूँकि परिवार ही समाज की प्रारंभिक इकाई है अतएव, मनुष्य का जन्म, विकास और संस्कृतीकरण परिभाषा परिवार से प्रारंभ होता है और इसी परिवार के प्रसार, से ही समस्त राष्ट्र का निर्माण होता है अर्थात पृथ्वी पर सम्पूर्ण मानव जाति का क्रमिक विकास परिवार से हुआ है ऐसा विचार मॉर्गन ने दिए हैं। इसलिए डी० मजूमदार ने कहा है कि मॉर्गन परिवार की अवधारणा एक गतिशील धारणा पर आधारित है।

मॉर्गन ने लिखा है कि परिवार की संरचना को प्रभावित करनेवाला प्रमुख तत्व विवाह है। विवाह के स्वरूप के आधार पर ही मॉर्गन ने परिवार

की विभिन्न अवस्थाओं की विवेचना की है
मॉर्गन परिवार की निम्न अवस्थाओं का वर्णन किए हैं:

(1) अनिश्चित एवं अव्यवस्थित परिवार - (promiscuous Family) -

परिवार के उद्विकास का यह प्रारम्भिक अवस्था रहा है। मानवउद्विकास की प्रारम्भिक अवस्था में मनुष्य के यौन सम्बन्ध पूर्णतः स्वच्छन्द था। स्त्री और पुरुष बहुत कुछ पशुओं की भाँति रहते थे यौन स्वच्छन्द के कारण विवाह सम्बन्धी मान्यताएँ और निषेध का प्रचलन नहीं हुआ था। व्यक्ति का कोई निश्चित परिवार नहीं था। स्त्रियाँ और पुरुष छोटे-छोटे समूहों में रहते थे। परिवार के वंश, नातेदारी, सम्बोधन एवं परस्पर व्यवहार भी नहीं था। इसलिए मॉर्गन ऐसे परिवार को अनिश्चित संरचना वाले और अव्यवस्थित परिवार कहा है।

2. समूह विवाही परिवार-(consanguine Family)

उद्विकासीय क्रम के आधार पर मॉर्गन ने समूह विवाही परिवारों को भी दो प्रकार बतलाए हैं।

A. रक्त सम्बन्धी समूह विवाही परिवार

1- इस अवस्था को मॉर्गन ने परिवार के विकास की दूसरी अवस्था के रूप में स्वीकार किया है, इनका कथन है कि अव्यवस्थित परिवारों के पश्चात इस प्रकार के समूह विवाही परिवार का जन्म हुआ है।

मॉर्गन के अनुसार समूह-विवाह के स्तर में विवाह जैसी संस्था का प्रादुर्भाव बन गया लेकिन समान रक्त के स्त्री-पुरुष अथवा भाई-बहन के बीच भी विवाह सम्बन्ध स्थापित करके परिवार का निर्माण किए गये।

'B' अनुरक्त सम्बन्धी समूह विवाही परिवार- मॉर्गन के अनुसार यह अवस्था परिवार के वैकासिक क्रम की तीसरी अवस्था है। इस अवस्था में बहुत-से पुरुष एवं अनेक स्त्रियाँ आपस में विवाह करते थे। इस प्रकार के विवाह-साथियों में रक्त सम्बन्ध नहीं पाए जाते थे। समूह विवाह की यह अवस्था जंगली युग तक सीमित रही। आगे मॉर्गन ने कहा है कि बर्बरता के युग में संस्कृति के विकास की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाने के साथ-साथ परिवारों के स्वरूप में भी परिवर्तन होने लगा।

'3' बहुपति विवाही परिवार- (Polyandrous Family)

परिवार का उदय बर्बरता युग के साथ माना जाता है। आदिम समाजों में जहाँ स्त्रियों की संख्या कम थी वहाँ एक स्त्री को अनेक पुरुषों से दाम्पत्य सम्बन्ध रखते हुए परिवार की स्थापना करने की अनुमति मिल गयी। एम्बर एवं एम्बर के अनुसार बहुपति विवाही परिवार की अवस्था में पुरुष किसी ऐसी स्त्री से भी विवाह कर सकता था जो अन्य पुरुष के साथ रहती हो। इस परिवार का वंश माता के नाम से चलती थी फलतः मातृवंशीय परिवार का निर्माण हुआ।

Scanned with Cam

4. पितृवंशी अथवा बहुपत्नी विवाही परिवार (patrilineal or polygamous family) मॉर्गन के अनुसार जब समाज में कृषि के विकसित उपकरणों का उपयोग होने लगा, नगरों का विकास हुआ। बड़े-बड़े सामंती साम्राज्य स्थापित हुए. पुरुषों का अधिकार बढ़ा फलत मातृवंशीय एवं मातृसत्तात्मक परिवार कुछ हद तक पितृसत्तात्मक एवं पितृवंशीय परिवार में परिवर्तित हुए। इस अवस्था में एक पुरुष द्वारा अनेक स्त्रियों से विवाह सम्बन्ध स्थापित करने को मान्यता मिली. जो परिवार के साथ सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन लाया। आज भी अफ्रीका के कुछ जनजातियों में मुखिया अनेक स्त्रियों से विवाह करना प्रतिष्ठा मानते हैं।

5. एकविवाही परिवार - (Monogamous family)

मॉर्गन के अनुसार सभ्यता के उदय का प्रभाव परिवार पर पड़ा है जिससे एकविवाही परिवार का जन्म हुए। एकविवाह परिवार में पुरुष का सत्ता रहता है परिवार का आकार काफी छोटा रहता है। आजकल ऐसे परिवार में स्त्री और पुरुष के समान अधिकार एकविवाही परिवार में मिल रहे हैं।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि जंगली युग में परिवारों की रचना अव्यवस्थित थी। स्त्री और पुरुष के यौन सम्बन्ध पर नियंत्रण के नियम नहीं थे

वन्यता के युग में स्त्रियों की यौन-स्वच्छन्दता प्रारम्भिक अवस्था तक बनी रही. लेकिन कुछ समय के पश्चात् पुरुषों पर विवाह सम्बन्धी निषेध कम होते चले गये। सभ्यता के युग का प्रारम्भ स्त्री-पुरुष के समतामूलक सम्बन्धों के साथ हुआ है जिसमें संस्कृति-संचरण का महत्वपूर्ण योगदान है।

आलोचनाएँ - मॉर्गन के परिवार के उद्विकास सिद्धान्त में कुछ कमी है जिसका चर्चा नीचे किए जा रहे हैं.

1. मॉर्गन प्रत्येक समाज में परिवार की उत्पत्ति व विकास एक ही तरह से कुछ निश्चित स्तरों में गुजरते हुए होता है जैसा कहना मॉर्गन का है जो प्रमाणित न होकर काल्पनिक है।
2. Rivers के अनुसार मॉर्गन कामाचार की अवस्था को अधिक महत्व दिए हैं जबकि जनजातियों जैसे समुदाय में कामाचार का महत्व सांस्कृतिक न अस्थायी रहा है।
3. मॉर्गन ने एकरेखीय सिद्धान्त पर परिवार का विकास एक क्रम से माने हैं जबकि परिवार का विकास, कई मान्यताओं एवं आदर्शों से हुआ है जिसका मूल्यांकन मॉर्गन नहीं किए, जो एक त्रुटि है।

फिर भी, मॉर्गन ने समाजशास्त्रीय चिन्तन में मौलिकता एवं बौद्धिकता लाने में सफल प्रयास किए हैं।

Scanned with Cam